E-Learning Study Material
By Prof (Dr) YADWENDRA SINGH
MAHARAJA COLLEGE, ARA
VKS UNIVERSITY, ARA, BIHAR

BA Part third Economics Hons
Paper - Six

Development of Small Scale Industries in Japan after Second World war:-

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद जापान के कुटीर एवं लघु उद्योगों का विकास :-

सन् 1945 के बाद जापान की औद्योगिक क्षेत्र में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए तीव्र औद्योगिक विकास के लिए सरकार ने नये निवेश के ~~[illegible]~~ एक बड़े भाग को बड़े पैमाने वाले तथा आधारभूत उद्योगों में लगाना शुरू कर दिया। इनके विपरीत लघु उद्योगों की कार्यक्षमता को बनाये रखने के लिए कोई विशेष प्रयास नहीं किया गया। वास्तव में, द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद जाइबात्सू के विघटन से इनकी कार्यक्षमता में ह्रास हो रहा था, साथ ही रेशम जैसी वस्तुओं के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में ह्रास तथा जापानी अर्थव्यवस्था की ~~[illegible]~~ संरचना में परिवर्तन के कारण इनकी कठिनाइयाँ बढ़ रही थी। इस सब के कारण जापानी

उद्योगों में आजकल द्वैधवाद बहुत ही महत्वपूर्ण हो गया है। एक ओर इंजीनियरिंग तथा बड़े बड़े आधारभूत उद्योगों में बड़े बड़े औद्योगिक संस्थान हैं और दूसरी ओर नये तथा पुराने दोनों प्रकार के उद्योगों में लघु तथा मध्यम आकार के संस्थान हैं। ये दोनों क्षेत्र उत्पादन की पद्धति तथा यंत्र इत्यादि में एक दूसरे से भिन्न हैं। फिर भी जापान के लघु उद्योगों की प्रतियोगी शक्ति में कमी नहीं हुई है। उन सभी क्षेत्रों में जहाँ पर वस्तु की प्रकृति इस प्रकार है कि उसके उत्पादन में कम पूँजीवादी रीतियों को अपनाया जा सकता है, उत्पादन कार्य लघु पैमाने के उद्योगों के ही हाथ में छोड़ दिया गया है।

जापान में लघु संगठनों के मालिक अपनी आंचलिक समितियों में महान भूमिका निभाते हैं तथा समाज में इनकी ऊँची आर्थिक तथा सामाजिक पद-प्रतिष्ठा होती है।

निष्कर्ष :- इस प्रकार जापानी औद्योगिक व्यवस्था में आज भी लघु एवं कुटीर उद्योगों का महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। इन्होंने औद्योगीकरण की प्रारंभिक अवस्था में जापान में पूँजी तथा तकनीक के अभाव को दूर करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इस संबन्ध में लाकउड ने लिखा है कि - "इसने पूँजी निवेश की वृहद् इकाइयों तथा उन उपक्रमी गुणों की आवश्यकताओं में मित व्ययिता करने में उसे (जापान को) समर्थ

बनाया है जिन्हें प्रारम्भिक अवस्थाओं में प्राप्त करना अधिक कठिन था।"

अल्पविकसित देशों के लिए शिक्षा :-

जापान के इस अनुभव से भारत जैसे अल्पविकसित देशों के आर्थिक विकास के लिए कई शिक्षाएँ मिलती हैं। एक तो बढ़ती हुई जनसंख्या एवं पूँजी के अभाव वाले देश के लिए लघु तथा कुटीर उद्योग जो प्रभाव पूर्ण ढंग से बड़े पैमाने पर बचतों (savings) तथा तकनीकी कुशलता के प्रयोग को संभव बनाते हैं के विकास पर अधिक जोर दिया जाना चाहिए।

दूसरे, लघु उद्योगों को यथासंभव नये नये आधुनिक अविष्कारों के प्रयोग द्वारा अपनी कार्यक्षमता को बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए तीसरे, इन्हें बड़े पैमाने के उद्योगों के प्रतिद्वन्दी के रूप में कार्य नहीं कर इनके सहायक के रूप में कार्य करना चाहिए।

चौथे, इन लघु संस्थानों की कुशलता को बढ़ाने के लिए सरकार द्वारा भी इन्हें समय समय पर उचित सहायता एवं मार्गदर्शन प्राप्त होते रहना चाहिए।